

5

साधो ! छांडो विषय विकारी...

साधो ! छांडो विषय विकारी । जातैं तोहि महा दुःखकारी...
 जो जैन धर्म को ध्यावै, सो आतमीक सुख पावै ॥ साधो ॥१॥

गज फरस विषैं दुःख पाया, रस मीन गंध अलि गाया ।
 लखि दीप शलभ हित कीना, मृग नाद सुनत जिय दीना ॥ साधो ॥१॥

ये एक एक दुःखदाई, तू पंच रमत है भाई ।
 यह कौनों, सीख बताई, तुमरे मन कैसें आई ॥ साधो ॥२॥

इनमांही लोभ अधिकाई, यह लोभ कुगति को भाई ।
 सो कुगति मांही दुख भारी, तू त्याग विषय मतिधारी ॥ साधो ॥३॥

ये सेवत सुख से लागैं, फिर अन्त प्राण को त्यागैं ।
 तातैं ये विषफल कहिये, तिन को कैसें कर गहिये ॥ साधो ॥४॥

तब लौं विषया रस भावै, जब लौं अनुभव नहिं आवै ।
 जिन अमृत पान ना कीना, तिन और रसन चित दीना ॥ साधो ॥५॥

अब बहुत कहां लौं कहिए, कारज कहि चुप है रहिये ।
 ये लाख बात की एक, मत गहो विषय की टेक ॥ साधो ॥६॥

जो तजै विषय की आशा, 'द्यानत' पावै शिव वासा ।
 यह सतगुरु सीख बताई, काहू बिरेले जिय आई ॥ साधो ॥७॥



हे सज्जन पुरुष! जिन विकारी विषयों के सेवन से तुमको महादुःख प्राप्त होता है उनका त्याग करो। जो जैनधर्म को ध्याता है अर्थात् उसके मार्ग अनुसरण करता है वह आत्मा के सच्चे सुख को प्राप्त करता है।

जैसे-हाथी स्पर्शन इन्द्रिय के विषय लोभ में गडडे में गिरकर, मछली रसना इन्द्रिय के विषय लोभ में कांटे में फंसकर, भंवरा सुगन्ध के लोभ में फूल में बंद होकर, पतंगा चक्षु इन्द्रिय के विषय के लोभ में अग्नि में जलकर और मृग कर्ण इन्द्रिय के विषय के लोभ में शिकारी के चंगुल में फंसकर अपने प्राण गंवा देते हैं।

ये तो एक-एक इन्द्रिय के लोभ के वश अपने प्राण गंवाते हैं और तुम तो पाँचों इन्द्रियों के विषयों में रमण कर रहे हो - हे जीव ! यह तुम्हें किसने सिखाया और इनको भोगने की बुद्धि तुमने कहाँ से प्राप्त की ? अतः इन विषय विकार का त्याग करो।

पाँच इन्द्रियों के विषयों में लोभ की अधिकता है और लोभ की वासना ही दुर्गति का मूल कारण है और इन गतियों में महादुःख सहन करने पड़ते हैं इसलिये हे ज्ञानीजीव ! तुम इनका त्याग करो।

ये पाँच इन्द्रियाँ सेवन के समय तो सुख रूप प्रतीत होती है परन्तु इनके सेवन से अंत में अपनी ही हानि है इसलिये इन्हें विषफल ही कहा है। अतः हे जीव ! इन विषफलों का तुम कैसे सेवन कर सकते हो अर्थात् इन विषय विकार का त्याग ही श्रेष्ठ है।

तथा जब तक इन विषय कषाय का रस आता है तब तक आत्मा का अनुभव भी नहीं हो सकता। और जिनने अपनी आत्मा के अमृत रस का पान नहीं किया है उनका चित्त सदैव विषय-कषायों के रस में ही रमता है।

अब इनकी बात कितनी कहें, इन विषयों का फल कहकर मौन हो जाना चाहिये और विषय - भोगों की आशा नहीं करना चाहिये - यही लाख बात की एक बात अर्थात् सार है।

द्यानतरायजी कहते हैं कि जो जीव विषयों की परवषता का त्याग करता है उसे मोक्ष का सुख प्राप्त होता है। दिगम्बर मुनिराजों ने भी यही शिक्षा दी है जो विरले जीवों को ही सुहाती है।